

डॉ. एलेन फिलिप्स, पुराने नियम का साहित्य, व्याख्यान 3, उत्पत्ति 1-2

© 2024 एलेन फिलिप्स और टेड हिल्लेब्रांट

मुझे पता है कि अभी कुछ मिनट ही बाकी हैं, लेकिन मैं कक्षा से पहले के 10 मिनट आपके कुछ और नामों पर काम करने में बिताने वाला था क्योंकि मैं अभी इसमें बहुत अच्छा नहीं हूँ। और बेशक, सोमवार को हमारी कक्षा नहीं होने का मतलब है कि मैं पिछले शुक्रवार तक जो कुछ भी सीखा था, उसे भूल गया। तो, मुझे माफ़ करें, हमें कंप्यूटर में थोड़ी समस्या हुई है, लेकिन मुझे लगता है कि हम जाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं, कम से कम जल्द ही।

आज हम शुरुआत में गाना भी गाएँगे। लेकिन यह कोई अच्छी आवाज़ नहीं होगी, जैसा कि आप अभी समझ सकते हैं। इसलिए अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं इसे अगली बार तक टाल दूँगा।

और शायद मेरी आवाज़ थोड़ी कर्कश होने के बजाय गाती हुई होगी। इसके बजाय, एक पल में, मैं भजन 104 के कुछ हिस्सों को पढ़कर हमारी शुरुआत करने जा रहा हूँ, जिसका संबंध सृष्टि से है। और जैसा कि आपको याद होगा, अगर आपने आज का अपना पाठ पूरा कर लिया है, तो हम आज सृष्टि के बारे में बात कर रहे हैं।

तो, यह बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। हालाँकि, ऐसा करने से पहले बस कुछ घोषणाएँ हैं। सबसे पहले, फिर से, पूरी तरह से वैकल्पिक, लेकिन आप में से जो लोग इन मुद्दों के कुछ वैज्ञानिक पहलुओं में रुचि रखते हैं, जिन पर हम चर्चा कर रहे हैं, मैं आपको आज रात 715 बजे यहीं आने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

मेरे पति पेरी ने इस क्षेत्र में बहुत अध्ययन किया है। वह एक खगोल भौतिक विज्ञानी हैं। मुझे लगता है कि अगर आपको लगता है कि मैं पक्षपाती हूँ तो टेड इस बात की पुष्टि करेंगे क्योंकि वह मेरे पति हैं, जो सच है।

मैं पक्षपाती हूँ क्योंकि वह मेरा पति है। वह एक अच्छा शिक्षक है, और वह जानता है कि वह किस बारे में बात कर रहा है। क्या यह सही है, टेड? क्या यह सही है? ठीक है।

दो अंगूठे ऊपर। वह उन लोगों में से एक है जिनके पास जटिल चीजों को समझने योग्य और दिलचस्प बनाने की असाधारण प्रतिभा है। हमारे कुछ गूढ़ क्षेत्रों में ऐसा अक्सर नहीं होता है।

लेकिन किसी भी मामले में, मैं आपको आमंत्रित करता हूँ कि यदि आप रुचि रखते हैं तो आएँ। हम उस दूसरे प्रश्न को उठाएंगे और फिर भजन 104 के कुछ हिस्सों को पढ़ने के बाद थोड़ा सा पुनरावलोकन करेंगे, जो कि, जैसा कि मैंने कहा, इसे शुरू करने का एक तरीका है, और फिर साथ में प्रार्थना करने के लिए कुछ समय लेंगे। तो चलिए मैं आपके लिए सृष्टि में ईश्वर की गतिविधि के कुछ अद्भुत प्रतिज्ञान पढ़ता हूँ क्योंकि वे आज के विषय के बारे में सोचने के लिए हमारे लिए एकदम सही मंच तैयार करते हैं।

तो, भजन 104, मैं इसे मौके पर ही पढ़ूंगा। हे मेरी आत्मा, प्रभु की स्तुति करो। हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, आप बहुत महान हैं।

तू वैभव और ऐश्वर्य से सुसज्जित है। पद 2 में, वह खुद को प्रकाश में लपेटता है जैसे कि एक वस्त्र के साथ। वह आकाश को एक कण्डरा की तरह फैलाता है, अपने ऊपरी कक्षों की कड़ियों को उनके जल पर रखता है।

यदि आप पाठ को नहीं पढ़ रहे हैं तो आप उसमें देख या सुन सकते हैं। उत्पत्ति के अध्याय 1 में कविता का एक काव्यात्मक प्रतिनिधित्व भी है। यह काफी प्यारा है।

श्लोक 5 में, उसने धरती को उसकी नींव पर स्थापित किया है। इसे कभी भी हिलाया नहीं जा सकता। श्लोक 13 और 14 में, वह अपने ऊपरी कक्षों से पहाड़ों को सींचता है।

पृथ्वी उसके काम के फल से संतुष्ट है। वह मवेशियों के लिए घास उगाता है और मनुष्यों के लिए खेती करने के लिए पौधे उगाता है, जिससे पृथ्वी से भोजन प्राप्त होता है। श्लोक 19 और 20 में, चाँद ऋतुओं को चिह्नित करता है।

सूर्य को पता है कि कब अस्त होना है। श्लोक 24: हे प्रभु, तेरे काम कितने हैं, और तूने उन सब को बुद्धि से बनाया है। पृथ्वी तेरे प्राणियों से भरी हुई है।

पद 27 और 28 सब लोग अपने भोजन के लिए उचित समय पर तेरी ओर देखते हैं। जब तू उन्हें देता है, तो वे उसे बटोर लेते हैं। जब तू अपनी मुट्ठी खोलता है, तो वे उत्तम वस्तुओं से तृप्त होते हैं।

पद 30: जब आप अपनी आत्मा भेजते हैं, तो वे सृजित होते हैं, और आप पृथ्वी का चेहरा नया कर देते हैं। और फिर समापन में, पद 33 और उसके बाद, मैं जीवन भर प्रभु के लिए गाता रहूँगा। जब तक मैं जीवित रहूँगा, मैं अपने परमेश्वर की स्तुति गाता रहूँगा।

मेरा ध्यान उसे प्रसन्न करे क्योंकि मैं प्रभु में आनन्दित हूँ। हे मेरी आत्मा, प्रभु की स्तुति करो। प्रभु की स्तुति करो।

और, बेशक, आप जानते होंगे कि प्रभु की स्तुति, जैसा कि हमने इसे अंग्रेजी में अनुवादित किया है, हललुया है। इसलिए, जब मैं प्रभु की स्तुति कहता हूँ, तो आप अपने मन में, मुझे आशा है, हललुया सोच रहे होंगे, जिसका एक जबरदस्त आनंदपूर्ण अर्थ है। आइए हम शुरुआत करते समय एक साथ प्रार्थना करने के लिए कुछ समय निकालें।

हमारे दयालु स्वर्गीय पिता, अनमोल उद्धारक और सत्य की पवित्र आत्मा, हमें उस महिमा की एक छोटी सी झलक पाने में मदद करें जिसका वर्णन भजनकार यहाँ कर रहा है और शक्ति और सामर्थ्य। पिता, अगर हम वहाँ हैं तो हमें हमारी आत्मसंतुष्टि से बाहर निकालिए और हमें आपकी महिमा और आपकी अच्छाई को फिर से देखने में मदद कीजिए। जैसा कि हम आज एक साथ

अध्ययन करते हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे विनम्रता और स्पष्टता के साथ सिखाने में मदद करेंगे।

हम सभी को आपकी पवित्र आत्मा और आपके वचन के चरणों में बैठकर एक साथ सीखने में मदद करें। और इसलिए, हम आपको धन्यवाद देते हैं। पिता, चूंकि हमारे देश की सरकार में बदलाव आया है, इसलिए हम अपने प्रशासन और अपने नए नेता के लिए प्रार्थना करते हैं कि आप उन्हें अपनी बुद्धि और अपनी कृपा प्रदान करें, क्योंकि वे कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

इसलिए, हमें प्रार्थना करने में विश्वासयोग्य बनने में मदद करें जैसा कि आपने हमें करने के लिए प्रोत्साहित किया है। और अब हम आपको यह घंटा अर्पित करते हैं। हम ये बातें मसीह के नाम पर धन्यवाद के साथ प्रार्थना करते हैं। आमीन।

ठीक है, अगर मैं आज खांसी की दवा के कारण नाक बहने और लार टपकाने लगूं तो आप मुझे माफ कर दीजिएगा। मुझे लगता है कि हम इस घंटे को काफी अच्छे से गुजार लेंगे।

मैं कुछ समय के लिए बात करना बंद करना चाहता हूँ। तो, जैसा कि आपने उत्पत्ति 1 से 3 तक पढ़ा है, और अभी उत्पत्ति 1 और 2 के बारे में विशेष रूप से सोचें क्योंकि आज हम यही कर रहे हैं। कोई भी ऐसी चीज़ जो आपको विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण लगे, चाहे हम आपके सवालों का जवाब दें या नहीं, मुझे नहीं पता।

लेकिन मैं आपको अभी कुछ बातें बताने के लिए आमंत्रित करता हूँ ताकि हम आगे बढ़ सकें। क्या आपके पास कोई खास सवाल है? क्या यह भाग्यशाली है? ठीक है, आगे बढ़िए। ठीक है, तो स्वर्गदूतों को कब बनाया गया था? अच्छा सवाल है।

वैसे, मैं औपचारिक व्याख्यान में इस पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ। इसलिए, मैं आपको कम से कम शुरुआती यहूदी रब्बियों की व्याख्या बताऊंगा, जो इसलिए थी क्योंकि दूसरे दिन, आपको इस बात की कोई स्वीकृति नहीं होती कि चीज़ें अच्छी हैं। और क्योंकि कुछ स्वर्गदूतों की सेनाएँ बुराई का एक घटक बन जाती हैं, दूसरे शब्दों में, पतित स्वर्गदूत, कुछ लोग सुझाव देते हैं कि यही वह समय है जब।

लेकिन बस एक विचार। हाँ, लूसी के पीछे है, ओह, मेरी मदद करो। कैसिया, धन्यवाद।

मेरा अनुमान है कि यह बहस का विषय है। यह बहस का विषय है। और संभवतः यह दोनों ही हो सकता है और जो भी हो।

हाँ, यह एक बेहतरीन सवाल है। और मुझे उम्मीद है कि हम इस पर थोड़ा और विस्तार से चर्चा करेंगे। और कुछ? और सवाल? मदद।

क्रिस्टन? धन्यवाद, ठीक है। मुझे आकृतियाँ पसंद हैं। यह अच्छा है।

हाँ, ठीक है। ठीक है, तो सवाल यह है कि हव्वा के निर्माण की प्रक्रिया के संदर्भ में क्या संकेत मिलता है? क्या आप यही कहना चाह रहे हैं? हाँ, अच्छा। उम्मीद है, हम थोड़ी देर बाद इस पर चर्चा करेंगे।

आखिरी मौका, सारा। क्या यह भगवान का इरादा था कि, आखिरकार, आदम और हव्वा वाकई अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ से खाएंगे? ठीक है, यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब मैं देना भी शुरू नहीं कर सकता। लेकिन मैं कुछ बातें बताने जा रहा हूँ कि अच्छे और बुरे के ज्ञान का क्या मतलब हो सकता है।

और शायद इससे हमें थोड़ी मदद मिल जाए। हो सकता है कि यह मुद्दे को और भी उलझा दे। कौन जानता है? ठीक है, बढ़िया सवाल है।

उनमें से कुछ पर हम बात करेंगे। कुछ पर हम बात नहीं करेंगे। मैं जो कुछ कहने जा रहा हूँ, उससे आप शायद संतुष्ट नहीं होंगे।

मैं शुरू करने से पहले बस इतना कहना चाहता हूँ। मैंने अपनी प्रार्थना में बहुत ही जानबूझकर मेरी ओर से विनम्रता की भावना के लिए प्रार्थना की क्योंकि पिछले कई वर्षों से मैं इस कक्षा को पढ़ा रहा हूँ और मेरा मानना है कि यह वह जगह है जहाँ शायद सबसे ज़्यादा मुखर मतभेद व्यक्त किए जाते हैं। मैं यह कहना चाहूँगा कि मैं न्याय और दया के बारे में पैगंबरों द्वारा कही गई बातों में भी उतना ही जुनून देखना चाहूँगा।

लेकिन ऐसा नहीं है। जब हम उन क्षेत्रों पर बात करेंगे जहाँ विवाद की संभावना है, तो मैं यथासंभव विनम्र रहने की उम्मीद करता हूँ। अगर मैं विनम्र नहीं हूँ, तो कृपया मुझे पकड़ने के लिए स्वतंत्र महसूस करें।

आपको पता चल जाएगा कि मैं किस स्थिति में हूँ, या कम से कम मुझे उम्मीद है कि आपको पता चल जाएगा। यह ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ आप बहुत सारी चीज़ें पेश करते हैं और फिर कहते हैं, आप चुनते हैं क्योंकि मुझे लगता है कि कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनके लिए सबूत मौजूद हैं जो दूसरों से बेहतर हैं। लेकिन इस पर राय में मतभेद हैं, और मैं निश्चित रूप से किसी ऐसे व्यक्ति को बदनाम नहीं करना चाहता जो मेरे से अलग स्थिति रखता हो।

सृष्टि के मुद्दे के संबंध में, कई साल पहले, उत्पत्ति पर बेहतर टिप्पणियों में से एक, जिसे डेरेक किडनर नामक व्यक्ति ने लिखा था, ने कहा कि उत्पत्ति 1 से निपटने के संबंध में 53 अलग-अलग स्थितियाँ हैं। खैर, अगर 53 हैं, और वह कई साल पहले की बात है, तो वे सभी बहुत सूक्ष्म होने जा रहे हैं, और हमें इस बात के बारे में सावधान रहना होगा कि हम इसे कैसे संबोधित करते हैं। तो, क्या आप मेरी बात समझ गए? मैं इस पर सावधानीपूर्वक और शालीनता से निपटना चाहता हूँ। मैं आपके सवालों और टिप्पणियों को प्रोत्साहित करता हूँ जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे।

हम शायद उन सभी को संबोधित न कर पाएं। इसीलिए आज रात से एक सप्ताह के लिए खुला मंच निर्धारित किया गया है ताकि इनमें से कुछ बातों पर आगे चर्चा की जा सके। खैर, मैं बस

थोड़ा सा समीक्षा करूँगा क्योंकि आज हम जिस बारे में बात कर रहे हैं उसके लिए यह बेहद महत्वपूर्ण है।

और वह यह है कि हमें यह याद रखना होगा कि सामान्य प्रकाशन, दूसरे शब्दों में, प्रकृति में परमेश्वर का प्रकाशन, परमेश्वर की शक्ति और दिव्य गुणों का प्रकाशन, जो रोमियों 1 में कहा गया है, प्राकृतिक दुनिया में, यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि हम किसी भी तरह से उस चीज़ को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते जो हम देखते हैं जब हम अपने आस-पास की दुनिया में जो कुछ भी देखते हैं उसका बहुत ध्यान से अध्ययन करते हैं। चाहे वह अंतरिक्ष और पूरे ब्रह्मांड का पूरा क्षेत्र हो, या फिर क्वॉंटम कण हों, या फिर भूविज्ञान हो, हम उस चीज़ को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। इसलिए, सामान्य प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ऐसा कहने के बाद, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि हम शास्त्रों में कही गई बातों को बहुत गंभीरता से लें ताकि जब वे कुछ खास शब्दों या कुछ खास अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल करें, तो हम कहें, हाँ, इसका इस बात पर कुछ प्रभाव पड़ता है कि हम इस पूरे मामले को कैसे समझते हैं। तो, क्या मैं यहाँ अंग्रेजी बोल रहा हूँ? हम यह नहीं भूल सकते कि ये दोनों ही हमारे लिए ईश्वर के संदेश हैं। और हमें दोनों को बहुत गंभीरता से लेना होगा क्योंकि हम सृष्टि के पूरे मुद्दे के बारे में बात करते हैं, खासकर उत्पत्ति 1 और 2 में।

ठीक है, आइए देखें कि हम क्या कर सकते हैं। मुझे वह चित्र पसंद है। यह हमें अंतरिक्ष की विशालता के अलावा ईश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ों की सुंदरता के बारे में सोचने पर मजबूर करता है, जिस पर हम बस कुछ ही देर में वापस आने वाले हैं।

उत्पत्ति का अवलोकन। सबसे पहले, उत्पत्ति का क्या अर्थ है? बस इसे चिल्लाकर बताइए। उत्पत्ति का क्या अर्थ है? हाँ, शुरुआत या शुरुआत।

यह वास्तव में अंग्रेजी शब्द उत्पत्ति है, जो हिब्रू में एक शब्द के ग्रीक अनुवाद से लिया गया है। यह कुछ ऐसा है जो आप शायद तब पाते हैं जब आप कहते हैं या पढ़ते हैं; यह इसका विवरण है। यह टोलेडोट है। और हिब्रू का ग्रीक में अनुवाद किया गया है।

और फिर यह अंग्रेजी में आता है। और हम इसे शुरुआत के रूप में सोचते हैं। और यह उचित है।

हम अगले हफ्ते या उससे भी पहले उत्पत्ति 1 से 11 के बारे में बात करने जा रहे हैं, और यह व्यापक ध्यान उन चीज़ों पर है जिनके बारे में हमें जानकारी मिलेगी, जैसे कि शुरुआत या उत्पत्ति। बहुत ही व्यापक ब्रश, सुंदर कविता में, उत्पत्ति ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में बात करती है। लेकिन बात यह है।

यह बहुत व्यापक ब्रशस्ट्रोक कविता है। और यह एक अध्याय है। यही कारण है कि हमें उस अविश्वसनीय रचना में वास्तव में क्या शामिल है, यह समझने के लिए प्राकृतिक विज्ञानों की ओर जाने की आवश्यकता है।

इसीलिए अगर आप आज रात यहाँ आएँगे, तो आपको समय और भव्य अंतरिक्ष के बारे में थोड़ा-बहुत पता चलेगा। खगोल विज्ञान हमें ब्रह्मांड की विशालता का अहसास कराता है। तो, जाहिर है, ब्रह्मांड और मानव जाति आज इसे समझेंगे, आदम और हव्वा के बारे में बात करेंगे और ईश्वर की छवि में बनाए जाने के निहितार्थों के बारे में बात करेंगे।

हम उन चीज़ों के बारे में थोड़ा और बात करेंगे। भगवान की इच्छा से, शुक्रवार को और उसके बाद, हम पाप की उत्पत्ति की त्रासदी को देखेंगे क्योंकि यह मानवीय क्षेत्र में प्रवेश करता है। और फिर, जाहिर है, वाचा भी एक अच्छा सौदा हासिल करेगी।

अंत में, जातीय भेद दिलचस्प हैं। जातीयता को क्या परिभाषित करता है? जब हम जातीय कहते हैं तो हमारा क्या मतलब होता है? इसके घटक भाग क्या हैं? क्या कोई जानता है? मेरी मदद करो। केटी।

कस्टन और केटी। ठीक है, आगे बढ़ो। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि इसका हिस्सा है।

और यहाँ सांस्कृतिक घटक क्या बनाने जा रहे हैं, खास तौर पर? क्योंकि जातीयता में बहुत कम, मेरा मतलब है, जातीयता में सिर्फ सांस्कृतिक से ज़्यादा कुछ है, मैं सुझाव दूँगा। हमारे पास एक अमेरिकी संस्कृति है। लेकिन कई उपसंस्कृतियाँ हैं जो अक्सर जातीयता पर आधारित होती हैं, है न? ठीक है, मुझे वहाँ एक नाम चाहिए।

तुम जिंजर हो। ठीक है। इसे जारी रखो।

सेमेस्टर के अंत तक, शायद मैं इसे प्राप्त कर लूँ। आगे बढ़ो। हाँ, और विश्वास शायद उन चीज़ों से परे हो जाएँगे जिन्हें हम जातीय रूप में भी सोचना चाहते हैं।

यहाँ अपने आप को थोड़ा सा संकेत देने के लिए वापस जाएँ। उत्पत्ति 1 से 11 में क्या है, इस पर विचार करें। और आइए देखें कि हमारे पास कुछ विशेष जातीय भेद कहाँ हैं जो वहाँ दिखाई दे रहे हैं।

ठीक है, अब मुझे एक और हाथ दिख रहा है जिसे मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ। मैट, तुम मैट हो। ठीक है।

ठीक है, भाषा का जातीयता से बहुत कुछ लेना-देना है, है न? सब कुछ नहीं, लेकिन भाषा। और हम निश्चित रूप से कुछ भाषाई भेद देखते हैं, है न, खासकर जब हमारे पास प्रसिद्ध टॉवर ऑफ बेबेल घटना होती है। तो यह परिभाषित करने वाले कारकों में से एक होने जा रहा है।

अब, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। मेरा मतलब है, यह संस्कृति में भी काफी हद तक शामिल है। और क्या? नाम? ओह, प्रिय।

मैट और मैट। ठीक है, मुझे पता है कि मैं इससे पहले भी गुज़र चुका हूँ, लेकिन मैं भूल गया। आगे बढ़ो।

ठीक है, और आप उस स्थान के विचार के साथ क्या करना चाहते हैं? यह ठीक है। आप सही हैं, और मैं आपको एक और एल शब्द दूंगा, और वह है भूमि। हम शायद इसके बारे में इतना नहीं सोचते क्योंकि हम अभी एक काफी मोबाइल वैश्विक दुनिया हैं।

लेकिन 1,000 साल पहले भी, शायद उससे भी कम समय पहले, लोग कौन थे, यह इस बात से तय होता था कि वे कहाँ रहते हैं। और इसलिए जातीयता का आपके जुड़ाव से बहुत कुछ लेना-देना है। आपका स्थान ठीक है।

मैं सिर्फ भूमि शब्द का इस्तेमाल करने जा रहा हूँ क्योंकि पुराने नियम के ज़रिए हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें भूमि का बहुत बड़ा महत्व है। और, बेशक, हमारे पास यह है, खास तौर पर नूह के बेटों के तीन अलग-अलग दिशाओं में जाने के बाद, है न? वे खास जगहों पर जा रहे हैं, और वे जगहें वास्तव में लोगों के इन समूहों को परिभाषित करने जा रही हैं, और फिर उनके भीतर उपसमूह हैं। ठीक है, हम बाद में इस पर वापस आएंगे, लेकिन इससे हमें थोड़ा सा अंदाज़ा मिलता है।

किसी भी तरह, उत्पत्ति के हमारे अवलोकन में, उत्पत्ति 1 से 11 में जिन व्यापक बातों के बारे में हम बात करने जा रहे हैं, उनके अलावा, हमारे पास परमेश्वर द्वारा एक विशिष्ट लोगों, अब्राहम के वंशजों को चुनने की शुरुआत है, और वाचा का पूरा विचार अब्राहम की वाचा पर केंद्रित है। और उन्होंने हमें आशीर्वाद देने के लिए चुना है। तो यह उत्पत्ति का बाकी हिस्सा है, और हम लगभग दो सप्ताह या उससे भी आगे वहाँ पहुँच जाएंगे।

चलिए थोड़ा आगे बढ़ते हैं। जैसा कि मैंने कुछ समय पहले कहा था, इस पूरी चर्चा में, खास तौर पर आज हम जो कर रहे हैं, उसमें विवाद की संभावना है। और इसलिए, मैं बस हमें इस बारे में जागरूक करना चाहता हूँ।

वैसे, बहस करने में कुछ भी गलत नहीं है, और मैं आपको मेरे साथ बहस करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। आप में से अधिकांश लोग जिस शैक्षिक प्रणाली से आए हैं, उसका एक बहुत ही दुखद पहलू यह है कि आपने, मुझे लगता है, मेरे जैसे लोगों द्वारा कही गई बातों को स्वीकार करना और उन पर चर्चा न करना सीख लिया है। यदि आप मेरे साथ बहस करते हैं, तो आपको मुझे भी बहस करने का अधिकार देना होगा।

क्या यह उचित है? मेरे ग्रेजुएट स्कूल से मेरी सबसे पसंदीदा यादों में से एक, मुझे पता है कि मैं विषय से भटक रहा हूँ, लेकिन मेरे ग्रेजुएट स्कूल के अनुभव से मेरी सबसे पसंदीदा यादों में से एक, और यह एक यहूदी संस्थान में था, जिसमें प्रशिक्षक मेज के एक छोर पर बैठा था, हम चार लोग बीच में थे, और फिर एक रब्बी, जिसका नाम रब्बी नेउसनर था, मेज के दूसरे छोर पर बैठा था। वैसे, वह 70 के दशक में था, और वह उस समय पीएचडी कर रहा था, क्योंकि वह ऐसा करना चाहता था। लेकिन वे खड़े थे, या वे तल्मूड के पाठ के बारे में बात कर रहे थे।

आपने डॉ. विल्सन की किताब में इसके बारे में पढ़ा होगा या पढ़ेंगे। वे सिर्फ़ शांत भाव से ताल्मूड के पाठ के बारे में बात नहीं करते थे। वे मेज़ के दोनों छोर पर खड़े होकर एक-दूसरे पर चिल्लाते थे और पाठ को ज़ोर से पीटते थे।

लेकिन आप जानते हैं क्या? उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि पाठ पढ़ते समय उन्होंने अपना किप्पा पहना हुआ था। वे बहुत सम्मानजनक थे। जब वे सब एक दूसरे पर चिल्लाना बंद कर चुके और कक्षा समाप्त हो गई, तो वे चले गए और साथ में कॉफी पी क्योंकि वे सबसे अच्छे दोस्त थे।

इस तरह से बात करना सीखें। इस तरह से सोचना सीखें। यहाँ जो कुछ हो रहा है, उसमें वास्तव में शामिल होना सीखें।

तो, अगर आप चाहें तो हम बहस कर सकते हैं। कोई बात नहीं। सबसे पहले, दो बातें।

इस बारे में कुछ चर्चा होती है, शायद हमारे बीच में नहीं, लेकिन खास तौर पर जब हम उत्पत्ति और मूसा की पहली पाँच पुस्तकों के बारे में पढ़ना शुरू करते हैं, कि क्या मूसा ने वास्तव में उन्हें लिखा था या नहीं। क्या आप इसके बारे में जानते हैं? इस पर बहुत चर्चा हुई। क्या मूसा ने यह सब लिखा था? या इसे लोगों के समूहों, अनाम लोगों द्वारा, इसके अंतिम संपादन के संदर्भ में 400, 500, और शायद 800 या 900 साल बाद लिखा गया था? अब, यह कोई ऐसा मुद्दा नहीं है जिस पर मैं यहाँ बहुत समय बिताता हूँ।

यदि आप इसे आगे बढ़ाना चाहते हैं, तो किसी बिंदु पर पेंटाटेच को लें। जब हम वास्तव में इसमें प्रवेश करते हैं, वास्तव में, हम इसे अभी पेंटाटेच कक्षा में कर रहे हैं, तो लेखकत्व के मुद्दे और मूसा की भूमिका को कैसे समझें। मुझे लगता है कि अगर हम इस पाठ के लेखन से मूसा को पूरी तरह से हटा दें तो हम एक बड़ी गलती करेंगे।

जब आप पाठ पढ़ते हैं, तो आप देखते हैं कि वह इसके कुछ पहलुओं को लिखने में शामिल है। लेकिन ऐसा कहने के बाद, हो सकता है कि बाद में किसी को इस पाठ को संपादित करने का मौका मिले। लेकिन यहाँ कुछ मुद्दे हैं।

और वहाँ बहुत सारे विवाद हैं जो दिखाई देते हैं। शायद यह आपको दूसरे वाले की तरह ज़्यादा दिलचस्प न लगे क्योंकि दूसरा वाला हमें विज्ञान से जुड़े कुछ मुद्दों पर ले जाएगा।

तो, रचना का उद्देश्य क्या यह ऐतिहासिक और तथ्यात्मक होना है, और इसमें वैज्ञानिक तथ्य, सत्य कथन के संबंध में विशेष प्रमाण हैं? क्या यही वह उद्देश्य है जिसके लिए भगवान ने इस पाठ को प्रेरित किया? या इसका उद्देश्य कुछ पूरी तरह से अलग करना है, और क्या हमें इसे ऐतिहासिक या वैज्ञानिक रूप से आधारित मानदंडों पर नहीं रखना चाहिए? महत्वपूर्ण प्रश्न। दूसरा विकल्प, जिसे आपके व्याख्यान की रूपरेखा में डाला गया है, वैसे, अगर आपके पास अपनी व्याख्यान रूपरेखा है, तो आप जानते हैं कि यह यहाँ नहीं है। लेकिन मैंने इसे भी अलग करने का फैसला किया है।

ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि यह सिर्फ एक धार्मिक कथन है और इसका कोई ऐतिहासिक या वैज्ञानिक होने का इरादा नहीं है। या, इसे और भी आगे ले जाते हुए, क्या इसका उद्देश्य सिर्फ एक मिथक होना है? अब, जब आप मिथक शब्द को मिथक की हमारी सामान्य परिभाषा से अलग समझते हैं, तो यह मत सोचिए कि ग्रीको-रोमन संस्कृति में बहुदेववादी देवताओं का एक समूह एक दूसरे से लड़ रहा है, वगैरह, वगैरह, वगैरह। जब इस विशेष क्षेत्र के विद्वान मिथक शब्द का उपयोग करते हैं तो हम इसके बारे में बात नहीं कर रहे होते हैं।

मिथक वह है जिसे मैंने यहाँ परिभाषित किया है, और यह एक सरल परिभाषा है, लेकिन यह हमारे लिए पर्याप्त है। मिथक एक ऐसी कथा है जो तथ्यात्मक रूप से सटीक नहीं है लेकिन सार्वभौमिक सत्य बताती है। अब, कुछ लोग मिथक के इस विचार को एक साथ रखेंगे।

उत्पत्ति 1 से 11 तक में यह मिथकीय है। हम इसे वैज्ञानिक, तथ्यात्मक या ऐतिहासिक सटीकता के मानक पर नहीं रख सकते। लेकिन मुद्दा यह नहीं है।

इसका उद्देश्य केवल सत्य को व्यक्त करना है। वे इस विचार को इसके धार्मिक महत्व के साथ जोड़ देंगे और कहेंगे कि इसका उद्देश्य केवल हमें कुछ धार्मिक शिक्षा देना है। क्या मैं इसे समझ पा रहा हूँ? क्या मुझे इसे फिर से कहने की ज़रूरत है, या आप ठीक हैं? आप में से कुछ लोग अपना सिर हिला रहे हैं।

उन्होंने कहा, नहीं, कृपया आगे बढ़ें। ठीक है, हम आगे बढ़ेंगे। यह हमें, निश्चित रूप से, इस खतरनाक बारूदी सुरंग में ले जाता है, और यहाँ बहुत सारी बारूदी सुरंगें हैं।

लेकिन हमें इस संबंध में कम से कम कुछ मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उत्पत्ति 1 और 2 के बारे में बात करते समय लिंग के संबंध में कुछ दिलचस्प मुद्दे भी हैं, न केवल हव्वा के निर्माण के संदर्भ में, बल्कि कुछ निहितार्थों के संदर्भ में कि वह आदम के साथ क्या कर रही थी और कैसे भगवान ने इस पूरी चीज़ को प्रकट करने के लिए डिज़ाइन किया था।

तो, हम इस बारे में बात करेंगे और फिर जब हम शुक्रवार को भगवान की इच्छा से पतन के बारे में बात करेंगे, तो इसे उठाएंगे। और फिर यह भी एक दिलचस्प विषय है, और हम इस बारे में बात करना शुरू कर सकते हैं क्योंकि मुझे स्पष्ट रूप से कोई जानकारी नहीं है, क्योंकि मैं ईश्वर के मन को समझने में सक्षम नहीं हूँ। लेकिन आप में से जो दार्शनिक हैं, वे हर समय इस पर संघर्ष करते रहते हैं।

जब हम उत्पत्ति 1 के बारे में बात कर रहे हैं, तो हम बुराई की उत्पत्ति के पूरे मुद्दे के बारे में कैसे सोचते हैं, जो कि एक बहुत ही स्पष्ट, भयानक बात है, जिसके साथ संघर्ष करना पड़ता है? यह कहाँ आता है, और हम इसे कैसे संबोधित करते हैं? तो ये वे मुद्दे हैं जिन्हें हम संबोधित करेंगे, या कम से कम थोड़ा सा सोचेंगे। अब, आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं? सबसे पहले, और वास्तव में, यह वह जगह है जहाँ हम आज अपना अधिकांश समय बिताने जा रहे हैं। मैं आपको कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में बताता हूँ जिन्हें हमें अपने रडार स्क्रीन पर रखना चाहिए क्योंकि हम इस सामान से निपट रहे हैं, और फिर हम बाइबिल के डेटा पर पहुँचेंगे।

जब हम सृजन और विकास, या सृजनवाद और विकासवाद जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, तो ज्यादातर लोगों के मन में इन शब्दों के अर्थ के बारे में कुछ बहुत ही निश्चित धारणाएँ होती हैं। और ज़रूरी नहीं कि वे उचित ही हों। सृजनवाद, अगर आप इस शब्द को न्यूयॉर्क टाइम्स के संपादकीय कार्यालय में फेंक दें, तो वे क्या सोचेंगे? ओह, डोवर, पेनसिल्वेनिया के वे लोग, जो सिर्फ बुद्धिमान डिज़ाइन, कैपिटल I, कैपिटल D, और यह सिखाने में रुचि रखते हैं कि भगवान ने इस दुनिया को 24 घंटे में बनाया है।

24, हाँ, माफ़ करें, सात दिन, जिनमें से प्रत्येक में 24 घंटे होते हैं। है न? जब लोग सृजन या सृजनवाद शब्द सुनते हैं तो बहुत से लोग यही सोचते हैं क्योंकि प्रेस में यही सार्वजनिक छवि पेश की जाती है। इसी तरह, हममें से कुछ लोग विकास शब्द सुनते हैं, और हम क्या सोचते हैं? ओह, इन सब चीज़ों के बारे में सोचने का ईश्वरविहीन तरीका, बस यह मान लेना कि हम एक विशाल प्रोटोप्लाज़्म से उत्पन्न हुए हैं।

शायद ये दोनों कैरिकेचर वास्तव में सिर्फ़ कैरिकेचर ही हैं। अब, शुरू से ही, मैं आपको बताने जा रहा हूँ, और अगर आपने इस पर ध्यान दिया है तो आप शायद पहले से ही जानते होंगे, कि इस मामले में गॉर्डन कॉलेज में अलग-अलग राय है। मैं जो बताने जा रहा हूँ, वह ज़रूरी नहीं है कि प्राकृतिक विज्ञान विभाग या कम से कम जीवविज्ञान विभाग आपको जो बताता है, उससे बिल्कुल मेल खाए।

यह ठीक है। यहीं पर हमारी चर्चा होती है, है न? लेकिन चलो कम से कम इस पर काम तो करते हैं। मेरे उद्देश्यों के लिए, जैसा कि मैं इस विषय पर बात करने की कोशिश करने जा रहा हूँ, विकास पहला शब्द है जिस पर हम चर्चा करना चाहते हैं और यह जीवन की उत्पत्ति का एक विशेष संदर्भ है।

दूसरे शब्दों में, यह मान लेना कि जीवन स्वतः ही उत्पन्न हुआ। यह उन कारकों में से एक है, जिसकी पुष्टि विकास से जुड़े लोग कर रहे हैं। और, बेशक, मुझे इससे कुछ समस्याएँ होंगी, क्योंकि इसके कारण उत्पत्ति 1 में बताए गए हैं। इसका संबंध मानवजाति के प्रकट होने से भी है।

क्योंकि फिर से, खासकर अगर आपने जीवविज्ञान की कुछ कक्षाएँ ली हैं, चाहे यहाँ या कहीं और, तो आपको यह अहसास होगा कि मानव जाति एक व्यवस्थित प्रक्रिया से विकसित हुई है, जिसमें बहुत समय लगा है। यह ठीक है। लेकिन यह उत्पत्ति 1 में कही गई बातों पर विश्वास नहीं करता है कि परमेश्वर ने पहले मामले में जीवन और दूसरे मामले में आदम और हव्वा को बनाने के लिए क्या किया।

हम इस पर वापस आएंगे। ऐसा कहने के बाद, मुझे लगता है कि यहाँ यह समझना बहुत ज़रूरी है कि हम जिसे मैक्रो और माइक्रोइवोल्यूशन कह रहे हैं, उसके बीच क्या अंतर है। अब, शायद बेहतर शब्द हों।

आपको यह शब्द पसंद नहीं आया, जैक। ठीक है, आगे बढ़िए। मैं सोच रहा था, एक सामान्य स्तर पर, ऐसा लगता है कि वास्तव में प्रजातियों के बीच इतना कठोर अंतर नहीं है।

प्रजातियाँ मनुष्यों से बहुत अलग हैं। और कुछ प्रजातियाँ इस प्रक्रिया में अधिक परिचित हैं। और कुछ प्रजातियाँ ऐसी भी हैं जो मनुष्यों से कहीं अधिक विकसित हैं।

लेकिन इस विशेष मामले में, हमारे पास एक मछली और अंडा है। और शायद यह मछली और दांत है क्योंकि बहुत सारे अलग-अलग जानवर हैं।

तो, मछली और दांत, शायद यह मछली और दांत है। मछली और दांत, शायद यह मछली और दांत है। लेकिन मछली और दांत, शायद यह मछली और अंडे है।

या शायद यह एक अलग प्रजाति है। या शायद यह कुछ अलग है। मेरा मतलब है, यह विकास और विकास की प्रक्रिया है।

ठीक है। यहाँ मैं निश्चित रूप से आपको आपकी जीवविज्ञान पृष्ठभूमि या रुचियों की ओर वापस ले जाऊँगा। हालाँकि, मेरी समझ यह है कि जब हम इन चीज़ों के बारे में बात कर रहे हैं, तो हमारे पास अभी भी कुछ महत्वपूर्ण अंतराल हैं।

मुझे अच्छी तरह पता है कि आपके पास संभोग से जुड़ी ये समस्याएँ हैं। और आपके पास डीएनए का पत्राचार भी है। मुझे यह पता है।

लेकिन उस पूरी डीएनए चर्चा में जो बात वाकई दिलचस्प है, वह यह है कि आप बाइबिल के रिकॉर्ड को पढ़कर इसकी उम्मीद करेंगे। क्योंकि दिलचस्प बात यह है कि जब बाइबिल का रिकॉर्ड सभी जीवित प्राणियों के निर्माण के बारे में बात कर रहा है, तो वह हमारा इस्तेमाल करता है। यह शब्द हम इंसानों के संदर्भ में इस्तेमाल होता है।

यह शब्द ज़मीन पर रेंगने वाली हर चीज़ के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। यह उसी शब्द का इस्तेमाल करता है, नेफेश हयाह। इसलिए बाइबिल के रिकॉर्ड से भी, उस शब्द का छोटा सा इस्तेमाल यह संकेत देता है कि कुछ वाकई दिलचस्प समानताएँ होने जा रही हैं।

लेकिन यह कहने के बाद, जब हम मानवजाति के निर्माण की बात करते हैं, तो कुछ स्पष्ट अंतर हैं, जो कि ईश्वर की सांस का मानव में प्रत्यारोपण है, उत्पत्ति 2। अब फिर से, यहाँ बहुत कुछ है जो मुझे नहीं पता। मैं आपको तुरंत यह स्वीकार करता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि हमें अभी भी कम से कम उन परिवर्तनों के बीच कुछ अंतर करने की आवश्यकता है जो हम नियमित आधार पर देखते हैं।

मुझे पता है कि विकासवादी परिवर्तन होते हैं। और फिर भी, कुछ प्रमुख चीज़ें जो आप और मैं हैं, स्पष्ट रूप से, सृष्टि के शिखर और हमारे अस्तित्व की उल्लेखनीय प्रकृति के संदर्भ में घटित हुई हैं, और जीवन के कुछ अन्य पहलुओं में आपके पास क्या है। बहुत सारे डीएनए साझा करना, इसमें कोई संदेह नहीं है।

बहुत कुछ साझा कर रहा हूँ। और फिर भी, कुछ विशेष अंतर। जीवाश्म रिकॉर्ड भी अभी इतने पूरे नहीं हैं कि हम यहाँ से पूर्ण उत्तराधिकार कह सकें।

तो, भले ही आप हमारे समकालीन शब्दों में संभोग के बारे में बात कर सकते हैं, हमारे पास पूरा जीवाश्म रिकॉर्ड नहीं है। तो हाँ, अगले सप्ताह वापस आएँ। हम इस पर आगे चर्चा कर सकते हैं।

फिर से, मैं कुछ क्षेत्रों पर आने वाला हूँ जहाँ मैं कहूँगा, अरे, मुझे नहीं पता कि उनमें से कुछ बिंदुओं पर क्या है। लेकिन हम चर्चा कर सकते हैं। दूसरी बात जो हमें कहने की ज़रूरत है वह यह है कि कुछ लोग विकास शब्द पर निराशा में अपने हाथ ऊपर उठाते हैं।

और फिर भी, सौर मंडल में हर समय विकास होता रहता है। आप में से जो लोग खगोल विज्ञान की कक्षा में गए हैं, वे तारकीय विकास शब्द से अच्छी तरह परिचित हैं और इसका क्या अर्थ है, साथ ही यह तथ्य भी कि इसका जीवन पर प्रभाव पड़ता है। यह सीधे तौर पर इससे जुड़ा हुआ नहीं है, लेकिन इसका जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

आज रात आइए, इससे आपको थोड़ी मदद मिलेगी। अब फिर से, मुझे पता है कि मैंने यहाँ सिर्फ़ समय के कुछ अंश दिए हैं। लेकिन मुझे लगता है कि हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि अगर हम इस पूरी चीज़ का विकासवादी मॉडल अपनाना चाहते हैं, तो हमें उत्पत्ति 1 और 2 को पढ़ना होगा, जो वैज्ञानिक रूप से सटीक नहीं हैं।

हम इसे या तो धार्मिक कथन के रूप में पढ़ते हैं, और मैं इसके बारे में थोड़ी देर में और अधिक बताने जा रहा हूँ, कि हम ऐसा कैसे कर सकते हैं और इसके क्या निहितार्थ हैं, या हम इसे मिथक के रूप में पढ़ते हैं। और फिर, ये दोनों एक साथ हो सकते हैं। क्या मैं अब तक स्पष्ट हूँ? और फिर, कृपया, मैं प्रश्नों का स्वागत करता हूँ, जैक।

मैं आपको बीच में ही रोक रहा हूँ, इसलिए नहीं कि मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता, बल्कि इसलिए कि हमें कुछ काम करने हैं। कैटलिन? आखिरी कथन? हाँ, अगर हम इस पूरी प्रक्रिया के विकासवादी मॉडल के साथ जा रहे हैं, तो हम ईश्वर के सीधे हस्तक्षेप के बिना लंबे, लंबे, लंबे, लंबे समय की अवधि के बारे में बात कर रहे हैं। हाँ, हाँ, हाँ, ठीक है।

में बदलाव के संदर्भ में दो और बातें हैं। हमने विकास के संबंध में कुछ बातों पर बात की है, जिनके बारे में हमें सोचना चाहिए। आइए हम सृष्टि और उस शब्द के उपयोग के संबंध में कुछ बातों पर बात करें, जिनके बारे में हमें सोचना चाहिए।

अगर हम एक प्राथमिक सृजन मॉडल को लेकर चलते हैं, और फिर से, यहाँ सभी प्रकार की बारीकियाँ हैं, तो भगवान ही शुरुआतकर्ता हैं। भगवान ही हैं जिन्होंने न केवल इसकी शुरुआत की है, बल्कि उन्होंने इसे इस तरह से डिज़ाइन किया है कि यह अपने बाहरी हिस्सों से लेकर अपने सबसे छोटे आंतरिक कणों तक असाधारण रूप से अच्छी तरह से काम करता है। फिर से, क्वांटम भौतिकी वहाँ किसी डिज़ाइन की तरह नहीं है।

और वह जीवन का स्रोत भी है, जो वह स्थान होगा जहाँ सृजन मॉडल, चाहे आप सृजन मॉडल का कोई भी चरण लें, विकासवादी मॉडल से अलग होगा। क्योंकि अगर हम सृजन मॉडल ले रहे हैं, तो भगवान ने जीवन को बनाया है, न कि बस उत्पन्न हुआ है। यहीं पर मुद्दा है।

और फिर मैं यह भी कहूंगा कि उसने मानवजाति को भी एक विशेष रचना के रूप में बनाया है। ऐसा कहने के बाद, मुझे लगता है कि यह कहना उचित है कि अगर हम ईश्वर के बारे में कोई धारणा बनाने जा रहे हैं कि ईश्वर कौन है और ईश्वर की प्रकृति क्या है, अगर उसने जीवन बनाया है, और अगर हम उस रचनात्मक ढेर के शीर्ष पर हैं, अगर आप चाहें, और अगर हम उसकी छवि में बने हैं, तो हमारे जीवन के मूल्य के बारे में कुछ अविश्वसनीय है। और यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

अंतिम पंक्ति भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वह जगह है जहाँ बाहर से लोग अक्सर यह नहीं समझते हैं कि सृजन की अवधारणा के भीतर, संभावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला है। यह युवा पृथ्वी सृजनवाद से लेकर आगे तक काम करता है, जो कहता है कि भगवान ने इसे सात शाब्दिक दिनों में किया, प्रत्येक दिन 24 घंटे तक चलता है। लेकिन फिर पुरानी पृथ्वी सृजनवाद दृष्टिकोण भी है, जो कहता है कि भगवान ने बनाया, लेकिन प्रत्येक दिन समय की एक बहुत, बहुत, बहुत लंबी अवधि है।

और ये बातें उस संदर्भ में सामने आती हैं। अब, अगर आपने आज का असाइनमेंट पढ़ा है, तो उनमें से एक था पेरी द्वारा जेनेसिस में 24 घंटे के दिन के संबंध में लिखा गया लेख पढ़ना और उसे सबसे अच्छे तरीके से कैसे समझा जाए। ठीक है, अब तक सब ठीक है? भाग्यशाली।

मैं इस सवाल पर अभी भी कायम हूँ कि छवि का क्या मतलब है, क्योंकि हम अंततः वहाँ पहुँचेंगे। अच्छा। हाँ।

जिंजर। हाँ, और यही वह हिस्सा है जिस पर जैक मुझे चुनौती दे रहा था। जो लोग माइक्रोइवोल्यूशन के बारे में बात करते हैं, वे कहते हैं कि बिना किसी सवाल के, प्राकृतिक चयन, यादृच्छिक उत्परिवर्तन और उन सभी प्रकार की चीजों के कारण जीवन के सरल चलन में परिवर्तन होते हैं।

और हम देखते हैं कि अगर आप दुनिया भर में इंसानों की एक पूरी श्रृंखला को देखें, तो आप पाएंगे कि त्वचा के रंग, हेयर स्टाइल, वगैरह के मामले में बदलाव होते हैं। बदलाव होते रहते हैं। हम सभी इंसान हैं।

यह सूक्ष्म बात है। मैक्रो का मतलब है, मान लीजिए, घोड़े से ऊँट में महत्वपूर्ण छलांग। यह एक खराब उदाहरण है, लेकिन उस बिंदु पर एक प्रमुख प्रजाति छलांग है।

यह मैक्रो होगा। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि हम इसके साथ क्या कर सकते हैं। आपने बाइबिल का डेटा पढ़ा है, तो चलिए शुरू करते हैं।

इसमें लिखा है, और अगर हम विशेष प्रकाशन को गंभीरता से लेना चाहते हैं, तो हमें इसे समझना होगा। शुरुआत में, परमेश्वर ने सृष्टि की। हमें उससे निपटना होगा।

अब, आप इससे कैसे निपटते हैं यह आप पर निर्भर करता है, लेकिन अगर आप इसे मिथक के रूप में पढ़ते हैं, तो इसके कुछ निहितार्थ होंगे। अगर हम इसे शाब्दिक रूप से पढ़ते हैं, तो हमें समझना होगा कि इसके भी कुछ निहितार्थ होंगे। शुरुआत में, भगवान ने सृष्टि की।

जैसा कि आप उत्पत्ति 1 पढ़ते हैं, और मैं यहाँ एक पल में एक तरह का चार्ट बनाने जा रहा हूँ, उत्पत्ति 1 के बारे में ध्यान देने योग्य बातें यह हैं कि आपने जो एनुमा एलीश में पढ़ा है, उदाहरण के लिए, आपने पुराने नियम के समानांतरों को भी पढ़ा है, इसके विपरीत, यह खाता न केवल कविता दिखाता है, बल्कि यह सृष्टि में एक व्यवस्थित प्रगति को दर्शाता है। और हम एक पल में उस क्रम को देखने जा रहे हैं। यह संक्षिप्त है, लेकिन यह पूरे ब्रह्मांड को शामिल करता है, स्वर्ग और पृथ्वी से लेकर, जो कि हमारी कल्पना से कहीं अधिक बड़ा है, जीवन के हर पहलू तक।

इतना काव्यात्मक, व्यवस्थित, संक्षिप्त, शब्द द्वारा संरचित, जिसे, जैसा कि मैंने आपको पिछले शुक्रवार को समझाने की कोशिश की थी, शब्दों के काम करने के तरीके के संदर्भ में कुछ बहुत ही जबरदस्त निहितार्थ हैं, फिर, इस सामान के बारे में बात करना और फिर शब्द न केवल सामान्य रहस्योद्घाटन बल्कि शायद विशेष रहस्योद्घाटन, उन क्षेत्रों के रहस्योद्घाटन का वर्णन करने के लिए कैसे काम कर सकते हैं जो हमारे माप से बाहर हैं। यहाँ आपके दिन के लिए प्रश्नोत्तरी प्रश्न है। निर्मित व्यवस्था का कितना प्रतिशत अवलोकनीय और मापने योग्य है? यह एक बुरा सवाल है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जो मैंने लगभग एक सप्ताह पहले कहा था।

किसी को याद है? नाम? जोआना। हाँ, 4.6%। बाकी सब कुछ ऐसा है जिसके बारे में हम जानते हैं कि वह वहाँ है, लेकिन हम उस पर नियंत्रण नहीं कर सकते। अगर हम अलौकिक क्षेत्रों के बारे में सोच रहे हैं तो शब्द उसके कुछ पहलुओं के बारे में बात करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

वैसे भी, पानी एक महत्वपूर्ण तत्व है, और आत्मा पानी की सतह पर चलती है। अब, मुझे यकीन नहीं है कि आप इसे किस हद तक आगे बढ़ाना चाहते हैं, लेकिन मैं 'अडम्ब्रेशन' शब्द का बड़ा समर्थक हूँ। क्या मैंने अभी तक आपके साथ इसका इस्तेमाल किया है? क्या हमने अडम्ब्रेशन का इस्तेमाल किया है? बढ़िया।

यह इस पाठ में बार-बार आता रहेगा। और क्या यह देखना दिलचस्प नहीं है ? क्योंकि संकेत का अर्थ है पूर्वाभास, टाइपिंग, आगे देखना, वगैरह। क्या यह देखना दिलचस्प नहीं है कि शुरू से ही, हमें इस सृष्टि के वृत्तांत में दिव्य व्यक्ति के कुछ पहलू दिखाई देते हैं? यह ईश्वर द्वारा सृजन है।

शब्द वहाँ है। और यूहन्ना 1 शब्दों और सृष्टि में शब्द की उपस्थिति के साथ कुछ दिलचस्प बातें करता है। और आत्मा भी वहाँ है।

किसी भी मामले में, प्रकाश और अच्छाई महत्वपूर्ण हैं। और मैं आपको सुझाव दूंगा कि जब भगवान प्रकाश को देखता है और उसे अच्छा घोषित करता है, तो हमारे पास कम से कम यह समझने की संभावना है कि इस पूरी चीज़ में किसी तरह का नैतिक घटक भी शामिल है। यह हमें दार्शनिक के दायरे में ले जाता है।

और मैं अभी इससे आगे कुछ नहीं कहूंगा। लेकिन इसके बारे में सोचो। इसके बारे में सोचो।

शुरू से ही, परमेश्वर अपनी सृष्टि के बारे में कुछ अच्छा बताता है, और वह उत्पत्ति 1 में ऐसा करना जारी रखेगा। खैर, यहाँ और भी बाइबलीय डेटा है, विशेष रूप से उस चार्ट के संबंध में जिसके बारे में मैं पहले बात कर रहा था। फिर से, यह हमें इस पूरी कहानी को समझने के कुछ संभावित तरीके देता है।

ध्यान दें, और मैं यहाँ मेरेडिथ क्लेन और अन्य लोगों से सीख रहा हूँ जिन्होंने इस पर काम किया है, कि हमारे पास दिन 1 से 3 तक बाई और बड़ी संरचनाएँ हैं, अगर आप चाहें तो। कुछ लोग इसे फ्रेमवर्क कहते हैं। है न? प्रकाश और अंधकार।

उस समय प्रमुख रचनात्मक अंतर बनाया गया था। लेकिन यह चौथे दिन तक नहीं था कि आपको बड़े ढाँचे में विशिष्ट रोशनी मिल जाए। इसी तरह, दूसरे दिन, पानी और आकाश।

ऊपर के पानी, इस आकाश, जो भी है, के बीच मुख्य अंतर। इसे हिब्रू में रक्किया कहते हैं। और नीचे का पानी।

लेकिन यह 5वें दिन तक नहीं है, इसके समानांतर, हमारे पास ऐसे जीव हैं जो एक तरफ पानी में और दूसरी तरफ आसमान में तैनात होने जा रहे हैं। तो, यहाँ एक अच्छा मेल है। यह बहुत काव्यात्मक है।

यहाँ आपको प्रमुख चीजें मिलेंगी। आपके पास वे लोग हैं जो इन प्रमुख संरचनाओं या ढाँचों को आबाद करेंगे। और फिर अंत में, तीसरे दिन, भूमि, शुष्क भूमि के उद्भव के साथ, और उस भूमि पर फिर वनस्पति का उत्पादन, यह वह ढाँचा होगा जिसके भीतर हमें दिन 6 में भूमि के सभी जीव दिखाई देंगे। इसलिए, कुछ लोग इसे यहाँ पर राज्य और वहाँ पर राजा के रूप में सोचते हैं।

अंधकार और प्रकाश पर शासन करने वाले लोग नक्षत्र, सूर्य, चंद्रमा और तारे होंगे। इसी तरह, जल और आकाश के जीव इस विशेष क्षेत्र पर हावी होंगे। और अंत में, यहाँ, मानव जाति के निर्माण में परिणत होकर, ये सूखी भूमि पर हावी होंगे।

दिलचस्प बात यह है कि 7वें दिन का कोई समापन नहीं है। इसमें कहा गया है कि परमेश्वर ने विश्राम किया, और उसने उसे आशीर्वाद दिया। उसने उसे पवित्र किया।

यह सप्ताह का दिन है। यह धन्य है। इसलिए, इस समय समय धन्य है।

लेकिन मैं आपको सुझाव दूंगा कि हम इस समय इब्रानियों के अध्याय 4 को पढ़ने के लिए समय नहीं निकालेंगे, लेकिन इब्रानियों के अध्याय 4 में इब्रानियों के लेखक की ओर से एक मजबूत चेतावनी है कि परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करना सुनिश्चित करें। और मैं सुझाव दूंगा कि हम अभी भी 7वें दिन में हैं। अब बेशक, मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि मैं इन सभी दिनों की लंबाई के बारे में कैसे सोचता हूँ। बहुत लंबी अवधि।

और इस समय ईश्वर अब सृष्टि के निर्माण में व्यस्त नहीं है, जो कि प्रत्येक सृजनात्मक दिन में एक असाधारण मात्रा में कार्य है। लेकिन अब वह ब्रह्मांड को बनाए रख रहा है। ब्रह्मांड को बनाए रखना ईश्वर का विश्राम है।

और फिर, ज़ाहिर है, इसके कई तरह के धार्मिक निहितार्थ भी हैं। ठीक है। हम दौड़ रहे हैं।

क्या हम सब ठीक कर रहे हैं? चलिए आगे बढ़ते हैं - दो अतिरिक्त बाइबिल संबंधी बातें। मुझे लगता है कि यहाँ तीन हैं।

मुझे लगता है कि मैंने एक और जोड़ दिया है। लेकिन किसी भी हालत में, हम देखेंगे कि क्या होता है। बाइबल को गंभीरता से लेते हुए, हमें इस बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है कि चाहे वह अध्याय 2 में वर्णित कथा हो या अध्याय 1 में वर्णित कविता, ईश्वर इस प्रक्रिया में अंतरंग रूप से शामिल प्रतीत होता है।

उसने बनाया। उसने स्थापित किया। रचा, हाँ।

निर्मित। उत्पत्ति 2 में, जहाँ वह धरती की धूल से आदम को बना रहा है, वह काफी अंतरंग भागीदारी है। और मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं हूँ कि मैं इसे मिथक के किसी विचार तक सीमित रखना चाहता हूँ।

साथ ही, फिर से, पाठ को गंभीरता से लेते हुए, भूमि और जल उत्पन्न करते हैं, तो ईश्वर की रचनात्मक प्रक्रियाओं के साथ-साथ विकासवादी प्रक्रियाओं के लिए उनके डिजाइन का एक सुंदर अंतर्संबंध उस पूरे मुद्दे में अच्छी तरह से काम कर सकता है। और मैं जानता हूँ, फिर से, यह एक अति सरलीकृत प्रस्तुति है। लेकिन मैं बस इतना चाहता हूँ कि आप देखें कि बाइबल के दृष्टिकोण से, हमारे पास दोनों हो सकते हैं।

योम। और फिर, अगर आपने लेख पढ़ा है, तो आप इस बात से अच्छी तरह वाकिफ होंगे। लेकिन यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

उत्पत्ति के संदर्भ में, अध्याय 2 में भी, दिन के रूप में अनुवादित शब्द का अर्थ 24 घंटे की अवधि नहीं है। मुझे यह कैसे पता? खैर, आपकी NIV यहाँ आपकी मदद नहीं करती। इसलिए मैं आपके लिए उत्पत्ति 2-4 को हिब्रू के शाब्दिक अनुवाद के रूप में पढ़ता हूँ।

क्षमा करें। हम पहले ही उत्पत्ति 1 से गुजर चुके हैं, है न? और परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण पूरा कर लिया है। और सात दिन हो चुके हैं, सात योम, अगर आप चाहें तो।

और यहाँ उत्पत्ति 2-4 आता है। यह वह विवरण है। यह वह पूर्ण वयस्क शब्द है जिसके बारे में मैं आपको पहले बता रहा था।

यह उस दिन का आकाश और पृथ्वी का विवरण है जब उन्हें बनाया गया था। इसलिए, योम का उपयोग उस संदर्भ में किया जाता है, जिसका उल्लेख वह इस बिंदु तक के पूरे समय के लिए

करता है। और फिर, काफी दिलचस्प बात यह है कि, और हम इसे अगली बार उठाएंगे, जब परमेश्वर आदम को अपनी चेतावनी देता है, जिस दिन तुम इसे खाओगे, तुम निश्चित रूप से मर जाओगे।

फिर से, इसका अनुवाद यह है कि जब यह न्याय नहीं करता है। जिस दिन तुम इसे खाओगे, तुम निश्चित रूप से मर जाओगे। जब आदम ने फल खाया तो परमेश्वर ने उसे तुरंत नहीं मार दिया।

वास्तव में, वह लंबे समय तक जीवित रहता है। दिन का मतलब लंबी अवधि हो सकता है। यही कारण है कि इसे यहाँ तीन अतिरिक्त मामलों को पढ़ना चाहिए।

जब शाम और सुबह जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है, तो कुछ लोग कहते हैं, शाम क्यों? पहले सुबह क्यों नहीं कहा जाता? लेकिन शायद यह सोचना अच्छा तरीका है कि शाम उस रचनात्मक अवधि को समाप्त कर देती है जो अभी तक चल रही है, जो भगवान ने जिस तरह से डिजाइन की है, उसी तरह से सामने आ रही है, और फिर सुबह अगली रचनात्मक अवधि शुरू करने जा रही है। हालाँकि, हम उन्हें समझते हैं। ठीक है। लगता है कि आप अभी भी मेरे साथ हैं।

हमने बाइबिल की सामग्री को देखा है। दूसरे शब्दों में, हमने विशेष प्रकाशन की सामग्री को देखा है। अब हम सामान्य प्रकाशन को थोड़ा देखेंगे और मूल रूप से, फिर से, बहुत व्यापक ब्रश सामग्री देखेंगे।

यह वास्तव में बहुत ही निकट का खगोलीय पिंड है - यह केवल 2,600 प्रकाश वर्ष दूर है।

और मानो या न मानो, जब हम ब्रह्मांड के उन सुदूर क्षेत्रों के बारे में बात कर रहे हैं जिनके बारे में हमारा हबल टेलिस्कोप हमें बता सकता है, तो यह बहुत करीब है। तो, यह एक तरह से खूबसूरत है, और यह आकाशगंगा का एक नजदीकी हिस्सा है। चलिए आगे बढ़ते हैं।

जब हम इन मुद्दों पर बात कर रहे हैं, तो प्रकृति के सभी पहलुओं पर विचार करना महत्वपूर्ण है। यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। और अब मुझे पता है कि यह वह जगह है जहाँ आप में से कुछ को ऐसा लग सकता है कि मैं आपके पैरों पर पैर रखूँगा, और मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं है, लेकिन मैं बस आपके लिए कुछ चीजें बताना चाहता हूँ जो इस तस्वीर का हिस्सा हैं।

उदाहरण के लिए, जब आप भूविज्ञान को देखते हैं, तो आप न केवल ग्रैंड कैन्यन में जाकर वहाँ लाखों साल देख सकते हैं, बल्कि आप में से जो लोग किसी समय भूविज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं, उनके लिए वहाँ वैरव हैं। क्या किसी को पता है कि वैरव क्या है? यह एक तलछटी जमाव है जिससे आप वास्तव में वर्षों को माप सकते हैं। आप वास्तव में वर्षों को माप सकते हैं।

क्योंकि वसंत ऋतु में, जमाव का रंग पतझड़ और सर्दियों से अलग होता है। अब, यहाँ जो दिलचस्प बात है वह यह है कि व्योमिंग में ग्रीन रिवर फॉर्मेशन नामक किसी स्थान पर, 7.5 मिलियन वर्ष का प्रतिनिधित्व किया गया है। और यह अन्य तलछटी पदार्थों के एक पूरे समूह के ऊपर है।

और इसके कई उदाहरण हैं, और हमें इससे निपटना होगा। हमें इससे निपटना होगा। यह उनमें से एक है जो मुझे विशेष रूप से प्रभावशाली लगता है।

भूवैज्ञानिक साक्ष्य, जीवाश्म सामग्री। जब आप खगोलीय मापों की ओर बढ़ना शुरू करते हैं, तो हम न केवल पृथ्वी की आयु देखते हैं, जैसा कि मैंने यहाँ सुझाया या उल्लेख किया है, बल्कि यह भी कि कुल मिलाकर ब्रह्मांड 13 अरब वर्ष से अधिक पुराना है। यह प्रकाश यात्रा समय पर आधारित है, जिसे उचित रूप से मापा जाता है।

आज रात आइए, आपको इस बारे में बहुत कुछ पता चलेगा कि यह कैसे काम करता है। आकाशगंगाओं की दूरी, और यह तथ्य कि हमारा ब्रह्मांड अब फैल रहा है। यह भी बहुत रोमांचक है।

यह तेजी से फैल रहा है। ब्रह्मांड का विस्तार तेजी से हो रहा है। खैर, यह सब कहने के बाद, हमें एक और बात पर ध्यान देने की जरूरत है, और यह महत्वपूर्ण है।

कभी-कभी लोग बाइबल की तुलना विज्ञान से करते हैं। और यह सेब और संतरे की तुलना करने जैसा है। इसलिए, डेटा ही तथ्य हैं।

डेटा वे तथ्य हैं जो बाइबिल के पाठ और सृजित व्यवस्था दोनों में दिखाई देते हैं। मैंने अभी जो बातें आपको बताई हैं, उनमें लगभग साढ़े सात लाख साल का वर्णन है... यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। हमने अभी जो बातें धर्मग्रंथ से पढ़ी हैं, वे बाइबिल के तथ्य हैं।

हम दोनों पक्षों के साथ जो करते हैं वह हमारे सिद्धांत हैं। धर्मशास्त्र बाइबल के पाठ में कही गई बातों के बारे में सिद्धांत बनाता है। और विज्ञान प्राकृतिक रहस्योद्घाटन के साथ भी यही काम कर रहा है।

आप इस लेख का बाकी हिस्सा पढ़ सकते हैं। डेटा प्रकृति से है। यह अंतर करना महत्वपूर्ण है, और मैंने थोड़ा पहले इसका उल्लेख किया था, कि हमारे पास भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड में क्या है, जो निरंतर है और हमें एक पुरानी पृथ्वी देता है, और हमारे पास भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड में क्या है, जो निरंतर है।

फिर से, चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं, यह हमें एक पुरानी पृथ्वी देता है। जीवाश्म रिकॉर्ड अभी भी रुक-रुक कर आ रहा है। अब, शायद एक समय ऐसा आएगा जब हम देखेंगे कि एक निरंतर जीवाश्म रिकॉर्ड भी होगा, जो विकासवादी परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करेगा, लेकिन हम अभी तक ऐसा नहीं देख पाए हैं।

खुश हो जाओ, यह इस क्लास में आखिरी बार है जब हम ये सब करने जा रहे हैं। मुझे यह पसंद है। लेकिन आपमें से कुछ लोगों को शायद यह पसंद न आए।

अगर हम इस पर मूल रूप से एक आस्तिक स्थिति से आ रहे हैं, दूसरे शब्दों में, आप और मैं, मुझे विश्वास है, कम से कम आप में से अधिकांश, इस बात की पुष्टि करते हैं कि एक ईश्वर है और

उसका इस सृष्टि से कुछ लेना-देना है जिसमें हम रह रहे हैं। यह एक आस्तिक स्थिति है। अब, ध्यान रखें कि मैं यहाँ जो पाँच बातें प्रस्तुत कर रहा हूँ, वे बहुत अधिक सूक्ष्म स्थितियों का संश्लेषण हैं, इसलिए इसे ध्यान में रखें।

अगर आपकी खास बात यहाँ नहीं है, तो कोई बात नहीं। अगर आप इस पर खास तौर पर... मुख्य रूप से विकासवाद पर ध्यान केंद्रित करके अपने मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में आगे बढ़ रहे हैं और मान लें कि आप जैविक क्षेत्रों में जो कुछ भी देखते हैं, उससे आश्चर्य हैं, तो आप सामान्य शिविर में पहुँच जाएँगे, और फिर से, यहाँ अलग-अलग छोटे क्षेत्र हैं, लेकिन आप आस्तिक विकासवादी स्थिति के सामान्य शिविर में पहुँच जाएँगे, जो कहता है कि ईश्वर ने चुना है, एक बार जब उसने जीवन बनाया और ब्रह्मांड बनाया, क्षमा करें, एक बार जब उसने ब्रह्मांड बनाया, तो ईश्वर ने बाकी सभी चीजों को प्रकट करने के लिए अपने तंत्र के रूप में विकासवाद को चुना। आप यहीं पर पहुँचने वाले हैं।

फिर से, आप उत्पत्ति 1 को कैसे पढ़ते हैं? खैर, आप इसे मिथक के रूप में या धार्मिक कथन के रूप में पढ़ते हैं। प्रगतिशील सृजनवाद एक तरह से एक बड़ी छतरी है, जिसमें इन दो सामान्य फ़ोकस में से एक होने जा रहा है, फिर से, यहाँ कुछ अलग-अलग बारीकियाँ हैं, लेकिन इन दो सामान्य फ़ोकस में से एक है। एक यह है कि सृजन पर ध्यान केंद्रित है, अब विकास नहीं।

अब, सृष्टि पर ध्यान केन्द्रित है, लेकिन योम शब्द का अर्थ है एक लंबी अवधि। उत्पत्ति में 24 घंटे के दिन के बारे में आज आपने जो लेख पढ़ा है, वह दिन-युग के दृष्टिकोण से आ रहा है। तो दिन का अर्थ है एक लंबी अवधि, एक अनिर्धारित लंबी अवधि, और इसलिए, ये सभी विकास जो हम प्राकृतिक दुनिया में देखते हैं, किसी न किसी तरह उसमें फिट बैठते हैं।

प्रगतिशील सृष्टिवाद को देखने का यह एक तरीका है। दूसरा तरीका यह है कि योम का मतलब दिन होता है, क्योंकि हम 24 घंटे के दिन की बात करते हैं, लेकिन यह वह दिन है जिस दिन ईश्वर ने सृष्टि के संबंध में विशेष घोषणाएँ की थीं। उस दिन, ईश्वर ने कहा, और फिर बीच में, आपके पास हर तरह का विशाल समय है।

यह इसका एक वैकल्पिक रूप है जो अभी भी वैज्ञानिक डेटा को समय की लंबी अवधि का संकेत देने की अनुमति देता है। लेकिन यह सृष्टि के साथ किसी तरह की भागीदारी में ईश्वर की निरंतर गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करता है। फ्रेमवर्क परिकल्पना इस पर एक अलग दृष्टिकोण से आती है।

यह मुख्य रूप से धार्मिक दृष्टिकोण है। यह इन सवालों से दूर जाने की कोशिश करता है कि एक दिन कितना लंबा होता है, और एक युग में हमारे पास कितने लाखों साल होते हैं, और इसके बजाय कहता है कि उत्पत्ति 1 में वैज्ञानिक होने का कोई झुकाव या उद्देश्य नहीं है, मैं कहूँगा। इसके बजाय, यह एक धार्मिक कथन प्रस्तुत कर रहा है।

यह कह रहा है कि ईश्वर ने ढाँचे बनाए हैं। याद कीजिए वे तीन मुख्य बातें जिनके बारे में हमने पहले, दूसरे और तीसरे दिन बात की थी? ईश्वर ने ढाँचे बनाए और उन्हें अपनी इच्छानुसार

आबाद भी किया। और इसका उद्देश्य आस-पास की संस्कृतियों के खिलाफ़ एक वाद-विवाद करना है।

क्या यह समझ में आता है? क्या आप जानते हैं कि वाद-विवाद क्या होता है? यह एक मौखिक लड़ाई है। तो अगर आप चाहें तो यह एक बचाव है। शायद इसे माफ़ी मांगना बेहतर होगा।

यह उन संस्कृतियों पर हमला है जिनमें कई देवता कई काम करते हैं, आदि। यह दिखाने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि यह ईश्वर ही है जिसने उन सभी संरचनाओं को बनाया है जिन्हें हम देखते हैं, और वे चीज़ें जो उन संरचनाओं का हिस्सा हैं, कनानी देवताओं के विपरीत जो कई हैं और आम तौर पर एक दूसरे से लड़ते हैं, या बेबीलोन के देवता। ठीक है।

युवा पृथ्वी सृजनवाद। और फिर, मुझे अच्छी तरह पता है कि आप में से कुछ लोग शायद इसी दृष्टिकोण से आए हैं, और मैं इसे समझता हूँ, और मैं आपकी राय को दबाना नहीं चाहता। यहाँ विचार यह है कि उत्पत्ति 1 में बताए गए दिनों का उद्देश्य 24 घंटे का दिन होना है, और इसलिए, भगवान ने उस सीमित समय सीमा में चमत्कारिक रूप से निर्माण किया है।

पृथ्वी लगभग 10,000 वर्ष पुरानी है। हम जो चीज़ें देखते हैं और मापते हैं, उनसे यह स्पष्ट होता है कि यह अलग है। परमेश्वर ने एक स्पष्ट आयु के साथ सृष्टि की है। आप में से कुछ लोग यह भी जानते होंगे कि उत्पत्ति 6 में नूह की बाढ़ पर बहुत ज़ोर दिया गया है। यदि आपके पास बाढ़ में प्रश्न हों तो हम इसके बारे में और बता सकते हैं।

खैर, एक और तरीका। यह, आप जानते हैं, 53 में से 5 है। शुक्र मनाइए कि हम बाकी सभी को भी नहीं अपना रहे हैं।

कुछ लोग इसे दूसरे तरह के धार्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं और कहते हैं, दिलचस्प बात यह है कि इसका ईश्वर द्वारा सृष्टि के पहले, दूसरे और तीसरे दिन क्या हुआ, यह बताने से कोई लेना-देना नहीं है। इसके बजाय, जब मूसा सिनाई पर्वत पर था, तो उसे ईश्वर से रहस्योद्घाटन मिला, और बेशक, हमें निर्गमन में दस आज्ञाएँ दिए जाने के बाद यह मिला। फिर यह विशेष स्थिति कहती है कि यह उस समय के दौरान था जब ईश्वर ने उन विशेष दिनों में भी खुलासा किया जब मूसा वहाँ था और ईश्वर की बनाई व्यवस्था के इन पहलुओं को प्रकट किया।

और इसलिए, पूरे रहस्योद्घाटन के दिनों का दृष्टिकोण एक तरफ़ विज्ञान और दूसरी तरफ़ बाइबिल के आंकड़ों के बारे में बात करने की स्पष्ट चुनौतियों से निपटने की कोशिश करता है। मुझे कहना चाहिए कि यह वैज्ञानिक डेटा है, है न? ठीक है, वे समझ में आते हैं। काफी हद तक? ठीक है, चलो इसके संबंध में कुछ और बातें करते हैं, और फिर हम समाप्त करेंगे। एक चीज़ जो हमें करने की ज़रूरत है क्योंकि हम इसे संबोधित कर रहे हैं, और मैंने पहले ही यह संकेत दिया है, वह है सामान्य रहस्योद्घाटन और विशेष रहस्योद्घाटन दोनों के बारे में बात करना और उन्हें उनका उचित उपचार देना।

उनके साथ ईमानदारी से पेश आएँ। मैं कबूल करता हूँ, और यहाँ पर मेरी धारियाँ वास्तव में इस बिंदु पर दिखाई देंगी, मैं कबूल करता हूँ कि भूविज्ञान में हम जो कुछ भी देखते हैं उसे बाढ़ के

अनुसार मानने में मुझे कुछ अलग समस्याएँ हैं। बाढ़ कैसे काम करती है, इस संदर्भ में कुछ अलग समस्याएँ हैं।

आपको बस बाढ़ को देखना है और देखना है कि यह उस तरह से काम नहीं करने वाला है। तो, आप जानते हैं, यह एक समस्या होने जा रही है। दूसरी ओर, मुझे उत्पत्ति 1 और 2 को मिथक के रूप में खारिज करने में वास्तविक समस्या है क्योंकि प्रेरित पौलुस ने ऐसा नहीं किया।

रोमियों 5 में, वह आदम को वास्तविक आदम के रूप में पढ़ रहा है। तो, आप जानते हैं, हमें इन चीज़ों से निपटना होगा। ठीक है, दूसरी बात जो मुझे लगता है कि हमें ध्यान में रखने की ज़रूरत है वह यह है कि सृष्टि इस बात की गवाही है कि परमेश्वर कौन है।

रोमियों 1 में परमेश्वर हमें सृष्टि को देखने के लिए बुलाता है, और हमें इसके माध्यम से परमेश्वर के बारे में कुछ जानने में सक्षम होना चाहिए। और इसलिए, यदि परमेश्वर ने ऐसी कोई चीज़ बनाई है जो धोखे के बराबर है, यानी, ऐसा लगता है कि यह वास्तव में पुराना है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है, अगर उसने इसे सृष्टि में बनाया है, तो परमेश्वर के बारे में कुछ ऐसा है जो मुझे यकीन नहीं है कि बहुत अच्छा है। ठीक है? मैं आपको सुझाव दूंगा, और मुझे लगता है कि आप इसे पहले ही समझ चुके हैं, कि परमेश्वर सृष्टि की प्रक्रियाओं में अपने चमत्कारी हस्तक्षेपों का उपयोग करता है, और वह उन चीज़ों का भी उपयोग करता है जिन्हें उसने काम करने के लिए डिज़ाइन किया है, यानी विकासवादी प्रक्रियाएँ।

तो, हमारे पास फिर से एक बहुत ही जटिल... हम इस बारे में बात करना शुरू नहीं कर सकते कि यह कितना अद्भुत है, भगवान की रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ इन चीज़ों के प्रकट होने की उनकी दैवीय देखरेख का एक जटिल अंतर्संबंध। खैर, यह बहुत सी चीज़ें हैं जो आपको खुश कर सकती हैं या नहीं भी कर सकती हैं। मुझे आज खत्म करना है।

मेरे पास यह करने के लिए पाँच मिनट हैं। मैं मानवजाति के निर्माण के बारे में बात कर रहा हूँ, और यह लकी के पहले के प्रश्न पर वापस आता है, बहुत पहले। निकट पूर्वी सोच में, यह अब केवल बाइबिल की बात नहीं है। यह व्यापक क्षेत्र है।

जब हम छवि के बारे में बात करते हैं, तो छवि का कार्य से सब कुछ लेना-देना होता है। तो, आपने आत्मा के बारे में पूछा। यह उससे भी ज़्यादा होने वाला है।

यह निश्चित रूप से भौतिक प्रतिनिधित्व के बारे में बात नहीं करता है - यह बात नहीं है। लेकिन यह इस छवि, और इस मामले में, भगवान की छवि के रूप में मनुष्य, को काम करने के लिए कैसे डिज़ाइन किया गया है।

और आदम, और फिर बाद में हव्वा, को परमेश्वर का वायसराय बनना था। उसे सृष्टि पर शासन करने के रूप में कार्य करना था। तो, यह एक कार्यात्मक प्रकार की चीज़ है।

जैसा कि हम देखते हैं कि भगवान ने आदम को कैसे बनाया, रचना शायद एक बहुत ही पुराना शब्द है, लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हम धरती की धूल के बारे में बात कर रहे हैं।

और फिर, हिब्रू शब्द, जब हम मनुष्यों को बनाते हैं, तो यह शब्द होता है, नेफेश हयाह , जो बिल्कुल वैसा ही शब्द है जिसका उपयोग बाकी जानवरों की दुनिया के लिए किया जाता है। जो अलग है वह है भगवान की सांस।

और यह अध्याय 2 में दिखाई देता है। परमेश्वर ने आदम में जीवन की साँस फूँकी। यही बात उसे अद्वितीय बनाती है। और मुझे लगता है कि यही छवि देता है।

जब हव्वा को बनाया गया, उत्पत्ति 2 में भी, एक लंबे समय के बाद, आदम ने जानवरों का नाम रखा, और वैसे, नाम रखना प्रभुत्व प्रदर्शित करने का एक तरीका है। आदम ने जानवरों का नाम रखा, उसे उसके लिए उपयुक्त कोई सहायक नहीं मिला, और इसलिए परमेश्वर ने हव्वा को बनाया। और यहाँ शब्द है।

एज़र होना चाहिए , जिसका अर्थ है मदद, केनेगडो , जिसका अर्थ है उसके विपरीत। कभी-कभी मदद करने वाले मांस का मतलब गुलाम की शर्तों के अनुसार कुछ होता है। यहाँ ऐसा नहीं हो रहा है।

वास्तव में, जो बात वास्तव में दिलचस्प है, यदि आप बाइबल शब्दकोश देखें तो पाएंगे कि एज़र शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर ईश्वर के लिए किया जाता है। ईश्वर सहायता करने वाला है। भजन संहिता में इस बात का उल्लेख कई बार किया गया है।

इसलिए एज़र किसी भी तरह से, आकार या रूप में अपमानजनक शब्द नहीं है। हव्वा को एक सहायक, आदम के बराबर, उसके विपरीत होने के लिए बनाया गया है। वे उत्पत्ति 2 के अंत तक सद्भाव में रहने जा रहे हैं। सृष्टि के उद्देश्य, खैर, भगवान कहते हैं, फलदायी और गुणा करना।

धरती की देखभाल करो। उसका उचित ढंग से रख-रखाव करो। उसके साथ काम करो।

यह उत्पत्ति 2 में भी दिखाई देगा। और फिर एक तरह का धार्मिक उद्देश्य जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। आगे की ओर देखते हुए, आदम वह वाहन बनने जा रहा है जिसका उपयोग परमेश्वर अपने छुटकारे के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए करने जा रहा है।

इसलिए, जब रोमियों 5 में पॉल पहले आदम और मसीह को दूसरे आदम के रूप में बताता है, तो आप कहेंगे कि परमेश्वर और उसके उद्देश्यों ने इसे बहुत पहले से ही तैयार कर रखा था। आदम की रचना बाद में अवतार के लिए वाहन है। इस संदर्भ में बस एक आखिरी बात और फिर मैं एनुमा एलीश के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करने जा रहा हूँ, और फिर हम समाप्त करेंगे।

ध्यान दें कि अध्याय 1 में, ईश्वर वह शब्द है जो आपके अंग्रेजी अनुवाद में दिखाई देता है। ईश्वर वह शब्द है जिसका अनुवाद हिब्रू शब्द एलोहिम में होता है, और इसमें पारलौकिकता का भाव निहित है।

शक्ति। शक्ति। उत्पत्ति अध्याय 1 के लिए एकदम सही शब्द, क्योंकि यह परमेश्वर ही है जिसने सब कुछ बनाया है।

अध्याय 2 में, आपका अंग्रेजी अनुवाद संभवतः बड़े अक्षरों में Lord पढ़ रहा है। हम बाद में उस नाम के बारे में बहुत कुछ कहने जा रहे हैं। लेकिन यह याहवे का अनुवाद कर रहा है, जो परमेश्वर का वाचा नाम है।

ध्यान दें कि जब परमेश्वर विशेष रूप से आदम और हव्वा के साथ बातचीत करता है, बगीचे में घूमता है जैसा कि वह अध्याय 3 में करने जा रहा है और आगे भी, वह उनके साथ संबंध में है। यह उसका वाचा संबंध नाम है। दिलचस्प बात यह है कि एलोहिम और यहोवा दोनों अध्याय 2 में दिखाई देते हैं, जो इस बात पर ध्यान देने जैसा है कि वे दोनों आदम और हव्वा के लिए परमेश्वर का अभिन्न अंग हैं।

लेकिन उत्पत्ति 3 में जब सर्प दृश्य में आता है, तो सर्प केवल एलोहीम का उपयोग करता है। सर्प परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ्य के बारे में जानता है। सर्प को परमेश्वर की संबंधात्मक क्षमता के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

ईव भी केवल उसी का उपयोग करेगी। ठीक है, बहुत जल्दी, और फिर हम रुकेंगे। मुझे उम्मीद है कि आपने अब तक एनुमा एलीश पढ़ लिया होगा।

ध्यान दें कि यह बहुत अलग है। हम थोड़ी देर में उन चीजों पर चर्चा करेंगे। लेकिन कुछ समानताएँ हैं।

और हम कम से कम उन पर ध्यान देना चाहते हैं। कुछ भी नहीं से एक स्पष्ट सृजन है और पानी और अंधकार प्रमुख हैं। ये बहुत सामान्य समानताएँ हैं।

हम बस जल्दी से विरोधाभासों के बारे में बात कर सकते हैं। उत्पत्ति 1 के विपरीत यहाँ स्पष्ट द्वैतवाद है जहाँ परमेश्वर केवल परमेश्वर है। निरपेक्ष, तियामत, और फिर उस बिंदु से लेकर मर्दुक तक।

भगवान थोड़े पागल होते हैं, और मैं इसे क्रोध के बजाय नासमझ उन्माद के संदर्भ में उपयोग करता हूँ, हालाँकि वे भी ऐसे ही होते हैं। और फिर, जैसा कि हम देख सकते हैं, यह कथन कैसे जाता है? मुझे याद नहीं है कि यह किसने कहा था, लेकिन यह कुछ इस तरह है। भगवान द्वारा मनुष्यों को अपनी छवि में बनाने के बाद, मनुष्यों ने लगातार प्रशंसा का बदला चुकाया है।

क्या आपको यह बात समझ में आई? मैं इसे फिर से दोहराऊंगा। भगवान ने इंसानों को अपनी छवि में बनाया, अब मैं और भी स्पष्ट रूप से कहूंगा: इंसान अपनी छवि में भगवान को फिर से बनाते रहते हैं। दूसरे शब्दों में, हम भगवान को नीचा दिखा रहे हैं, न्यूनतावादी हैं, आदि।

मेरा सुझाव है कि यही हो रहा है। ठीक है, हमें रुकना चाहिए। यह थोड़ी देर बाद होगा।

आपको देर तक रोके रखने के लिए क्षमा करें। आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए धन्यवाद। फिर से, अगर ये बातें आपके लिए ज्वलंत प्रश्न हैं, तो आज रात आएँ, अगले सप्ताह आएँ।

हम उनका थोड़ा सा पीछा करेंगे।